मुंशी प्रेमचंद का निबंध

साहित्य का उद्देश्य

भाग 2

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा

छठा सेमेस्टर

डॉ. राजेन्द्र सिंह

आचार्य, हिन्दी विभाग

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार

स्नातक प्रतिष्ठा हिन्दी छठा सेमेस्टर

पाठ्यक्रम मुंशी प्रेमचंद

Email – rajendersingh@mgcub.ac.in

मुंशी प्रेमचंद का जीवनकाल

31 जुलाई 1880 – 8 अक्तूबर 1936

- यह समय भारत में अंग्रेजों की गुलामी का समय था।
- लेखकों और सृजनकर्मियों पर अंगेजों की विशेष निगाह रहती थी।
- मुंशी प्रेमचंद की 'सोजेवतन' कहानी संग्रह को जब्त भी कर लिया गया था।
- इसका बड़ा कारण यही था कि इस संग्रह की कहानियों के पात्र स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जनमानस का निर्माण करने की भूमिका निभा रहे थे।
- मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल के एक अति महत्त्वपूर्ण साहित्यकार हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबंध एवं आलोचना में बेहतरीन साहित्य की रचना की है।
  लगभग 300 कहानियां लिखी। जो मानसरोवर के 8 भागों में संकलित हैं।
- बड़े घर की बेटी, नमक का दरोगा, सत्याग्रह, कफन, शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी, नशा, सवा सेर गेहूं, पूस की रात इनकी सुप्रसिद्ध कहानियां हैं।
- प्रेमचंद को 'कथा सम्राट' और 'उपन्यास सम्राट' भी कहा जाता है।

मुंशी प्रेमचंद के मुख्य उपन्यास निम्न प्रकार हैं –

कर्मभूमि, निर्मला, गबन, गोदान, रंगभूमि, प्रतिज्ञा, प्रेमा, प्रेमाश्रम, सेवासदन, कायाकल्प।

‘मंगलसूत्र’ अधूरा उपन्यास

‘दुर्गादास’ एक बालोपयोगी उपन्यास

यह निबंध सत्यप्रकाश मिश्र जी द्वारा संपादित ‘प्रेमचंद के श्रेष्ठ निबंध’ में संकलित है।

यह निबंध भारत में लखनऊ में 9-10 अप्रैल 1936 को संपन्न पहले ‘प्रगतिशील लेखक संघ’ के अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण के तौर पर तैयार किया गया था

इस अधिवेशन में मुंशी प्रेमचंद के साथ जैनेन्द्र ने भी शिरकत की थी।

यह निबंध सम्मेलन में पढ़ा गया था।

इस निबंध में साहित्य, साहित्यकार एवं समाज के अंतर्संबंध पर गहनता से विचार-विमर्श किया गया है।

मुंशी प्रेमचंद मानते हैं कि –

- साहित्य पाठक के हृदय में दृढ़ता पैदा करता है।
- वह कर्मशक्ति, विश्वास, सार्थकता, साहस, धैर्य, जिजीविषा के गुण का विस्तार करता है।
- निरर्थकता, कायरता, भीरूता और अविश्वास पैदा करने वाला साहित्य समाज के लिए घातक है।
- ऐसे साहित्य की आवश्यकता ही नहीं, जो जड़ता, पतन और लापरवाही की ओर ले जाता हो।
- मनव के लिए उपयोगी साहित्य को ही प्रेमचंद साहित्य मानते हैं।
- वे साहित्य को भी उपयोगिता की दृष्टि से देखते हैं।

"मुझे यह कहने में हिचक नहीं कि मैं चीजों की तरह कला को भी उपयोगिता की तुला पर तौलता हूं। निस्संदेह कला का उद्देश्य सौंदर्यवृत्ति की पुष्टि करना है। और वह हमारे आध्यात्मिक आनंद की कुंजी है, पर ऐसा कोई रुचिकर मानसिक तथा आध्याम्कि आनंद नहीं, जो अपनी उपयोगिता का पहलू न रखता हो। आनंद स्वतः एक उपयोगिता-युक्त वस्तु है और उपयोगिता की दृष्टि से एक वस्तु से हमें सुख भी होता है और दुख भी। – मुंशी प्रेमचंद

‘आजमाये को आजमाना मूर्खता है।’ इस कहावत के अनुसार यदि हम अब भी धर्म और नीति का दामन पकड़कर समानता के ऊंचे लक्ष्य पर पहुंचना चाहें, तो विफलता ही मिलेगी। – मुंशी प्रेमचंद

- लेखक कहना चाहता है कि धर्म से मानवता का उद्धार कभी नहीं हुआ।
- विशेष रूप से प्रेमचंद के समय में भारतीयों की आजादी के रास्ते में धर्म भी एक अवरोधक का काम कर रहा था।
- भारतीय संदर्भ जहां अनेक धर्म, संप्रदाय और मतावलंबी हों, वहां धर्म पर एकाग्र व्यवस्था अनेक विरोधाभासों को जन्म देती है।
- साहित्य का उद्देश्य धार्मिक श्रेष्ठता की अपेक्षा मानव-मानव में समानता का गुण विकसित करना होता है।

लेखक कहता है कि हमें बदलते परिवेश के अनुरूप अपनी सौंदर्य दृष्टि में भी बदलाव करना ही पड़ेगा।

- साहित्य में जहां भारी भरकम शब्दावली, चामत्कारिक रूप में शब्दों का संयोजन को ही साहित्य समझा जाता था, वहीं सामान्य लोकभाषा में कही गई जीवन की सच्चाई को भी साहित्य की श्रेणी में रखना चाहिए।
- अति सुंदर सुकोमल नायिका की अपेक्षा श्रम-मंडित स्त्री में सुंदरता देखने की दृष्टि को विकसित करना पड़ेगा।

प्रेमचंद जी लिखते हैं - ''साहित्य का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है, - उसका दर्जा इतना न गिराइए। वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सचाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सचाई है।''

- साहित्यकार समाज का वह अकादमिक महानुभाव होता है जिससे समय-समय पर समाज के कर्णधार समझे वाले लोग भी सलाह मशविरा करते हैं।
- उसके अंदर स्वाभिमान और देशानुराग अति आवश्यक है।
- उसका साहित्य लोगों का संस्कार निर्मित करता है।
- वह समाज के शिक्षक की भूमिका में होता है।
- वह समाज की चाल में नहीं ढलता अपितु समाज की चाल बदलने का प्रयास करता है।
- साहित्यकार को बहुवेत्ता बनना पड़ता है। उसे अपने साहित्य में अनेक विषयों का सामंजस्य करना पड़ता है।
- इसके लिए उसे अधिक से अधिक अध्ययनशील होना पड़ता है।

यदि साहित्यकार ने अमीरों के याचक बनने को जीवन का सहारा बना लिया हो, और उन आंदोलनों, हलचलों और क्रांतियों से बेखबर हो, जो समाज में हो रही हैं, अपनी दुनिया बनाकर उसमें हंसता-रोता हो, तो इस दुनिया में उसके जगह न होने में कोई अन्याय नही। - प्रेमचंद

मुंशी प्रेमचंद ने साहित्यकार को समाज का शुभचिंतक और मार्ग-प्रदर्शक माना है और इस निबंध में वे लिखते हैं -

- साहित्यकार समाज का सर्वोत्तम शिक्षाविद और सर्वोत्तम मानसिक शक्ति-संपन्न व्यक्ति होता है।
- वह कभी भी मानसिक पूंजीपति का गुलाम ना बने।
- बल्कि समाज को पूंजीवाद की जकड़न से बाहर निकलने में मदद करे।
- साहित्यकार का उद्देश्य है कि वह समाज में स्नेह, करुणा, सहयोग और सहानुभूति के विस्तार लिए साहित्य की रचना करे।
- वह अपनी कलम की साख कभी गिरने न दे।
- साहित्यकार को अपनी कलम की नैतिकता को जिंदा बनाए रखना है।
- वह अपने लिखे का विश्लेषण जरूर करे। रचना कई प्रक्रियाओं से गुजरकर ही प्रौढ़ बनती है।

हम साहित्यकारों में कर्मशक्ति का अभाव है। यह एक कड़वी सच्चाई है, पर हम उसकी ओर से आंखें नहीं बंद कर सकते हैं। अभी तक हमने साहित्य का जो आदर्श सामने रखा था, उसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी। कर्माभाव ही उसका गुण था, क्योंकि अक्सर कर्म अपने साथ पक्षपात और संकीर्णता को भी लाता है। - मुंशी प्रेमचंद

- कहना होगा कि मुंशी प्रेमचंद कर्म को महत्त्व देने वाले रचनाकार हैं। वे निठल्लेपन को पसंद नहीं करते।
- साहित्य और साहित्यकार के व्यक्तिगत जीवन का गहरा अंतर्संबध होता है।
- कर्मशील साहित्यकार का साहित्य ही समाज का मार्ग प्रशस्त करता है।
- साहित्य में उच्च चिंतन साहित्यकार की कर्मशीलता से ही आ सकता है।

धन्यवाद